सप्तम माला, खंड 39, अंक 1 सोमवार, 25 जुलाई 1983/3 श्रावण, 1905 (शक)

लोक-सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी-संस्करण

(बारहवां सत्र)

(खण्ड 39 में अंक 1 से 10 तक हैं)

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

विषय-सूची

[सप्तम माला, खण्ड 39, बारहवां सत्र, 1983/1905 (शक)]

अंक 1 सोमवार, 25 जुलाई, 1983/ 3 श्रावण, 1905 (शक)

विषय	पृष्ठ
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	9
निधन संबंधी उल्लेख	10-16

लोक-सभा के लिए निर्वाचित सदस्यों की वर्णानुक्रम सूची

सप्तम लोक-सभा

अ

अंकिनीडू, श्री एम० (मछलीपटनम)
अंकिनीडू, प्रसाद राव, श्री पी० (बापतला)
अग्रवाल, श्री सतीश (जयपुर)
अजीत प्रसाद सिंह, श्री (प्रतापगढ़)
अन्सारी, श्री जियाउर्रहमान (उन्नाव)
अनवर अहमद, श्री (हापुड़)
अनुरागी, श्री गोदिल प्रसाद (बिलासपुर)
अप्पालानायडू, श्री एस० आर० ए० एस० (अनकापल्ली)
अब्दुल समद, श्री (बैल्लौर)
अब्बासी, श्री काजी जलील (डुमरियागंज)
अमरीन्द्र सिंह, श्री (पटियाला)
अर्जुनन, श्री के० (धर्मपुरी)
अराकल, श्री जेवियर (एरणाकुलम)
अरुणाचलम, श्री एम०(टेंकासी)
अल्लूरी, श्री सुभाषचन्द्र बोस (नरसापुर)
असफाक हुसैन, श्री (महाराजगंज)
अहमद, बेगम आबिदा (बरेली)
अहमद, श्री गुलशेर (सतना)
अहमद, श्री मोहम्मद असरार (बदायूँ)
अहमद, श्री कमालुद्दीन (बारंगल)
अहिरवार, श्री रामप्रसाद (सागर)

आ

आचार्य, श्री बसुदेव (बांकुरा)
आजमी, डा० ए० यू० (जौनपुर)
आजाद, श्री गुलाम नबी (बाशिम)
आजाद, श्री भागवत झा (भागलपुर)
आनन्द सिंह, श्री (गोंडा)
आर्य, श्री कुम्भा राम (सीकर)

इन्द्रवेश, स्वामी (रोहतक)

इन्द्राकुमारी, श्रीमती (अलीगढ़)
इम्बीचीबावा, श्री ई० के० (कालीकट)

ई

ईरा अनबारासु, श्री (चिंगलपट्टू)
ईरा मोहन, श्री (कोयम्बटूर)

उ

उइके, श्री छोटेलाल (मांडला)
उन्नीकृष्णन्, श्री के० पी० (बड़ागरा)
ओडेदरा, श्री भरतकुमार मालदेवजी (पोरबंदर)
उरांव, श्रीमती सुमति (लोहारडगा)

ए

एन्थनी, श्री फ्रैंक (नामनिर्देशित—आंग्ल-भारतीय)
एक्का, श्री क्रिस्टोफर (सुन्दरगढ़)
ऐंगटी, श्री बीरन सिंह (स्वायत्तशासी जिला)

क

कंडास्वामी, श्री एम० (त्रिरुचेंगोडे)
कर्ण सिंह, डा० (ऊधमपुर)
कमलनाथ, श्री (छिन्दवाड़ा)
कमला कुमारी, कुमारी (पलामू)
कर्मा, श्री लक्ष्मण (बस्तर)
करुणानिधि, श्री थाझाई एम० (नागापट्टिनम)
कलानिधि, डा० ए० (मद्रास मध्य)
कश्यप, श्री जयपालसिंह (आंवला)
काजी सलीम, श्री (औरंगाबाद)
कादरी, श्री एस० टी० (शिमोगा)
काबुली, श्री अब्दुल रशीद (श्रीनगर)
काहनडोल, श्री जेड० एम० (मालेगांव)
किदवई, श्रीमती मोहसिना (मेरठ)
कुचन, श्री गंगाधर एस० (शोलापुर)
कुंवर, राम श्री (नवादा)
कुन्हम्बु, श्री के० (कन्नानौर)
कुरियन, प्रो० पी० जे० (मवेलीकारा)
कुलनदईबेलु, डा० वी० (चिदम्बरम)
कृष्ण, श्री एस० एम० (माण्डया)
कृष्णन्, श्री जी० वाई० (कोलार)

कृष्ण प्रतापसिंह, श्री (महाराजगंज)
केन, श्री लालाराम (बयाना)
केयूर भूषण, श्री (रायपुर)
कैलाशपति, श्रीमती (मोहनलालगंज)
कोचक, श्री गुलामरसूल (अनन्तनाग)
कोडियन, श्री पी० के० (अडूर)
कोसलराम, श्री के० टी० (त्रिरुचेंडूर)
कौशल, श्री जगन्नाथ (चंडीगढ़)
कौल, श्रीमती शीला (लखनऊ)

ख

खां, श्री आरिफ मोहम्मद (कानपुर)
खां, श्री गयूर अली (मुजफ्फरनगर)
खां, श्री गुलाम मोहम्मद (मुरादाबाद)
खां, श्री जुल्फिकार अली (रामपुर)
खारलुखी, श्री बाजूबन आर० (शिलांग)
खां, श्री मलिक एम० एम० ए० (एटा)

ग

गंगवार, श्री हरीशकुमार (पीलीभीत)
गधावी, श्री भेरावदन के० (बनासकांठा)
गामित, श्री छीतूभाई (माण्डवी)
गरचा, श्री देवेन्द्र सिंह (लुधियाना)
गहलोत, श्री अशोक (जोधपुर)
गांधी, श्रीमती इन्दिरा (मेडक)
गांधी, श्री राजीव (अमेठी)
गाडगिल, श्री० वी० एन० (पुणे)
गायकवाड़, श्री उदयसिंह राव (कोल्हापुर)
गायकवाड़, श्री आर० पी० (बड़ौदा)
गायत्री देवी, श्रीमती (कैराना)
गावित, श्री मानिकराव होडल्य (नन्दरबार)
गिरि, श्री सुधीर (कन्टई)
गोगोई, श्री तरुण (जोरहाट)
गिरिराज सिंह, श्री (सुल्तानपुर)
गुफरान आजम, श्री (बेतूल)
गुप्त, श्री इन्द्रजीत (बसीरहाट)
गौजागिन, श्री० एन० (वाह्य मणिपुर)
गोपालन, श्रीमती सुशीला(अलप्पी)
गोमांगो, श्री गिरिधर (कोरापुट)

गोयल, श्री कृष्णकुमार (कोटा)
गोहिल, श्री जी० बी० (भावनगर)
गोंडर, श्री ए० सेनापति (पलानी)
गौड़ा, श्री एच० एन० नन्जे (हसन)
गौडा, श्री डी० एम० पुत्ते (चिकमंगलूर)

घ

घोरपाड़े, श्री आर० वाई० (वेल्लारी)
घोष, श्री नीरेन (दमदम)
घोष, श्रीमती विभा गोस्वामी (नवद्वीप)

च

चन्द्रपाल सिंह, श्री (अमरोहा)
चन्द्रशेखर, श्री (बलिया)
चन्द्रशेखर सिंह, श्री (बांका)
चक्रधारी सिंह, श्री(सरगुजा)
चक्रवर्ती, श्री सत्यसाधन (कलकत्ता दक्षिण)
चटर्जी, श्री सोमनाथ (जादवपुर)
चतुर्भुज, श्री (झालावाड़)
चतुर्वेदी, श्रीमती विद्यावती (खजुराहो)
चन्द्राकर, श्री चन्दूलाल (दुर्ग)
चन्द्रशेखरप्पा, श्री टी० वी०(दावनगेरे)
चरणजीतसिंह, श्री (दक्षिण दिल्ली)
चरण सिंह, श्री (बागपत)
चव्हाण, श्री यशवन्तराव (सतारा)
चव्हाण, श्री एस० बी० (नांदेड़)
चावड़ा, श्री ईश्वर भाई खोड़ा भाई (आनन्द)
चिंगवांग कोनयक, श्री (नागालैंड)
चिन्नास्वामी, श्री सी० (गोबिचेट्टिपलयम)
चेन्नुपति, श्रीमती विद्या (विजयवाड़ा)
चौधरी, श्री ए० बी० ए० गनी खान (माल्दा)
चौधरी, श्री के० बी० (बीजापुर)
चौधरी, श्री चित्तूरी सुब्बाराव (एलुरु)
चौधरी, श्रीमती ऊषा प्रकाश (अमरावती)
चौधरी, श्री मनफूल सिंह (बीकानेर)
चौधरी, श्री मोती भाई आर० (मेहसाना)
चौधरी, श्री सैफुद्दीन (कटवा)
चौधरी, श्री त्रिदिव (बरहामपुर)
चौबे, श्री नारायण (मिदनापुर)

चौहान, श्री फतहभान सिंह (धार)

छ

छांगुर राम, श्री (लालगंज)

ज

जक्कायन, श्री एस० टी० के० (पेरियाकुलम)
जगजीवनराम, श्री (सासाराम)
जगपाल सिंह, श्री (हरिद्वार)
जाखड़, श्री बलराम (फिरोजपुर)
जटिया, श्री सत्यनारायण (उज्जैन)
जाफर शरीफ, श्री सी० के० (बंगलौर उत्तर)
जदेजा, श्री दौलतसिंह जी (जामनगर)
जमीलुर्रहमान, श्री (किशनगंज)
जयदीप सिंह, श्री (गोधरा)
जायनल अबेदिन, श्री (जंगीपुर)
जितेन्द्र प्रसाद, श्री (शाहजहांपुर)
जेठमलानी, श्री राम (बम्बई उत्तर पश्चिम)
जेना, श्री चिंतामणि (बालासोर)
जैन, श्री निहालसिंह (आगरा)
जैन, श्री भीकूराम (चांदनी चौक)
जैन, श्री वृद्धिचन्द्र (बाड़मेर)
जैनुल बशर, श्री (गाजीपुर)

झ

झा, श्री कमलनाथ (सहरसा)
झा, श्री भोगेन्द्र (मधुबनी)
झारखंडेराय, श्री (घोसी)

ट

टण्डन, श्री प्रभुनारायण (दमोह)
टाइटलर, श्री जगदीश (दिल्ली सदर)
टुडू, श्री मनमोहन (मयूरभंज)

ठ

ठाकुर, श्री शिवकुमार सिंह (खंडवा)

ड

डागा, श्री मूलचन्द (पाली)

डामोर, श्री सोमजी भाई(दोहद)
डूंगर सिंह, श्री(हमीरपुर)
डेनिस, श्री एन० (नागरकोइल)
डोगरा, श्री गिरधारी लाल (जम्मू)

त

तपेश्वर सिंह, श्री (विक्रमगंज)
तारिक अनवर, श्री (कटिहार)
तिरकी, श्री पीयूष (अलीपुरद्वार)
तिवारी, श्री कृष्ण प्रकाश (इलाहाबाद)
तिवारी, प्रो० के० के० (बक्सर)
तिवारी, श्री चन्द्रभाल मणि (बलरामपुर)
तिवारी, श्री नारायण दत्त (नैनीताल)
तिवारी, श्री रामगोपाल (जंजगीर)
तुर, श्री लहना सिंह (तरनतारन)
तेइयेंग, श्री सोबेंग (अरुणाचल पूर्व)
तैयब हुसैन, श्री (फरीदाबाद)

थ

थामस, श्री स्कारिया (कोट्टायम)
थुंगन, श्री पी० के० (अरुणाचल पश्चिम)
थोरट, श्री भाऊसाहिब (पंढरपुर)

द

दंडपाणि, श्री सी० टी० (पोल्लाची)
दंडवते, श्रीमती प्रमिला, (बम्बई उत्तर-मध्य)
दंडवते, प्रो० मधु (राजापुर)
दत्त, श्री अमल (डायमंड हार्बर)
दलबीर सिंह, श्री (शहडोल)
दलबीर सिंह, श्री (सिरसा)
दाभी, श्री अजीत सिंह (कैरा)
दास, श्री अनादि चरण (जाजपुर)
दास, श्री रेणुपद (कृष्णनगर)
दिग्विजय सिंह, श्री (सुरेन्द्रनगर)
दिगम्बर सिंह, श्री (मथुरा)
दुबे, श्री बिन्देश्वरी (गिरिडीह)
दुबे, श्री रामनाथ (बांदा)
देव, श्री बी० किशोरचन्द्र एस० (पार्वतीपुरम)
देव, श्री संतोष मोहन (सिल्चर)

देवराजन, श्री बी० (रसिपुरम)
देसाई, बी० वी० (रायचूर)
धोते, श्री जाम्बुवंत (नागपुर)

न

नगनगोम मोहेन्द्रा, श्री (आन्तरिक मणिपुर)
नगीना राय, श्री (गोपालगंज)
नन्दी येल्लैया, श्री (सिद्दपेट)
नागरत्नम, श्री टी० (श्री पेरंबदूर)
नाडार, श्री ए० नीलालोहिथादसन (त्रिवेन्द्रम)
नामग्याल, श्री पी० (लद्दाख)
नायर, श्री बी० के० (क्विलोन)
नायकर, श्री डी० के० (धारवाड़ उत्तर)
नायक, श्री जी० देवराय (कनारा)
नायक, श्री मृत्युंजय (फूलबानी)
नायडू, श्री पी० राजगोपाल (चित्तूर)
नारायण, श्री के० एस० (हैदराबाद)
नाहटा, श्री बी० आर० (मन्दसौर)
नूरुल इस्लाम, श्री (धुबरी)
निहाल सिंह, श्री (चन्दौली)
निहालसिंहवाला श्री जी० एस० (संगरूर)
नीखरा, श्री रामेश्वर (होशंगाबाद)
नेगी, श्री टी० एस० (टिहरी गढ़वाल)
नेताम, श्री अरबिन्द (कांकेर)
नेहरू, श्री अरुण कुमार (रायबरेली)

प

पंडित, डा० बसन्त कुमार (राजगढ़)
पटनायक, श्रीमती जयन्ती (कटक)
पटनायक, श्री बीजू (केन्द्रपाड़ा)
पट्टाभिरामा राव, श्री एम० बी० पी० (राजमुंद्री)
पटेल, श्री अमृत (गांधीनगर)
पटेल, श्री अहमद मोहम्मद (भड़ौच)
पटेल, श्री उत्तमभाई एच० (बलसार)
पटेल, श्री सी० डी० (सूरत)
पटेल, श्री मोहनलाल (जूनागढ़)
पटेल, श्री शान्तुभाई (साबरकंठा)
पत्तु स्वामी श्री डी० (वन्डावाशी)
पदायाची, श्री एन० एस० रामास्वामी (तिण्डीवनम)

पनिका, श्री रामप्यारे (राबर्ट्सगंज)
परमार, श्री हीरालाल आर० (पाटन)
परांजपे, श्री बाबूराव (जबलपुर)
पराशर, प्रो० नारायण चन्द (हमीरपुर)
परुलेकर, श्री बापू साहिब (रत्नगिरि)
पलानीअप्पन, श्री सी० (सलेम)
पवार, श्री बालासाहिब (जालना)
पांडे, श्री कृष्णचन्द्र (खलीलाबाद)
पाइलट, श्री राजेश (भरतपुर)
पाटिल, श्री ए० टी० (कोलाबा)
पाटिल, श्री चन्द्रभान आठरे (अहमदनगर)
पाटिल, श्री जगन्नाथ शिबराम (ठाणे)
पाटिल, श्री विजय एन० (इरन्दोल)
पाटिल, श्री शिवराज वी० (लातूर)
पाटिल, श्री शंकरराव (बारामती)
पाटिल, श्री उमराव (यवतमाल)
पाटिल, श्री बालासाहिब विखे (कोपरगांव)
पाटिल, श्री वीरेन्द्र (बागलकोट)
पाठक, श्री आनन्द (दार्जिलिंग)
पाणिग्रही, श्री चिन्तामणि (भुवनेश्वर)
पार्थसारथी, श्री पी० (राजमपेट)
पारधी, श्री केशवराव (भंडारा)
पाल, प्रो० रूप चन्द (हुगली)
पासवान, श्री रामविलास (हाजीपुर)
पुजारी, श्री जनार्दन (मंगलौर)
पुलय्या, श्री दारूर (अनंतपुर)
प्रधानी, श्री के० (नौरंगपुर)
प्रभु, श्री आर० (नीलगिरि)
प्रसन्न कुमार, श्री एस० एन० (चिकबल्लापुर)
प्रेमी, श्री मंगलराम (बिजनौर)
पेंचालैया, श्री पसाला (तिरुपति)
पेंचालैया, श्री पुचलापल्लि (नेल्लौर)
पोटदुखे, श्री शांताराम (चन्द्रपुर)

फ

फर्नांडीस, श्री ओस्कर (उदीपी)
फर्नांडीस, श्री जार्ज (मुजफ्फरपुर)
फुलवारिया, श्री विरदाराम (जालोर)
फैलीरो, श्री एडुआर्डो (मारमागाओ)

बनातवाला, श्री जी० एम० (पोन्नानी)
बहुगुणा, श्री हेमवती नन्दन (गढ़वाल)
बंसीलाल, श्री (भिवानी)
बर्मन, श्री पलाश (बलूरघाट)
बेरबा, श्री बनवारीलाल (टोंक)
बरवे, श्री जे० सी० (रामटेक)
बरार, श्रीमती गुरबिन्दर कौर (फरीदकोट)
बरोट, श्री मगनभाई (अहमदाबाद)
बहेरा, श्री रासबिहारी (कालाहांडी)
बसु, श्री चित्त (बारसाट)
बाग, श्री अजित (सिरमपुर)
बागड़ी, श्री मनीराम (हिसार)
बागुन, श्री सुम्बरूई (सिंहभूम)
बाजपेयी, डा० राजेन्द्र कुमारी (सीतापुर)
बालन, श्री ए० के० (ओट्टापालम)
बालानन्दन, श्री ई० (मुकुन्दपुरम)
बालेश्वर राम, श्री (रोसेड़ा)
बीरबल श्री (गंगानगर)
बीरेन्द्र सिंह, श्री राव (महेन्द्रगढ़)
विष्णु प्रसाद, श्री (कलियाबोर)
बूटासिंह, श्री (रोपड़)
वृजेन्द्र पाल सिंह, श्री (सम्भल)
बैठा, श्री डूमरलाल (अररिया)
बैरो, श्री ए० ई० टी० (नामनिर्देशित—आंगल-भारतीय)
बोड्डेपल्ली, श्री राजगोपाल राव (श्री काकुलम)

भ

भक्त, श्री मनोरंजन (अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह)
भगत, श्री एच० के० एल० (पूर्व दिल्ली)
भगत, श्री बी० आर० (सीतामढ़ी)
भगवानदेव, आचार्य (अजमेर)
भट्टाचार्य, श्री सुशील (बर्दवान)
भाटिया, श्री रघुनन्दन लाल (अमृतसर)
भारद्वाज, श्री परसराम (सारंगढ़)
भीखाभाई, श्री (बांसवाड़ा)
भीमसिंह, श्री (झुन्झुनू)
भूरिया, श्री दलीपसिंह (झाबुआ)
भूयन, श्री भुवनेश्वर (गौहाटी)

भोई, डा० कृपासिन्धु (सम्बलपुर)
भोये, श्री रेशमा मोती राम (धुले)
भूपति, श्री जी० (पेद्दापल्लि)
भोले, श्री आर० आर० (बम्बई दक्षिण-मध्य)

म

मकवाना, श्री नरसिंह (ढंढुका)
मण्डल, श्री सनत कुमार (जयनगर)
मण्डल, श्री धनिक लाल (झंझारपुर)
मणि, श्री के० बी० एस० (पेरम्बलूर)
मधुकर, श्री कमला मिश्र (मोतिहारी)
मन्नीलाल, श्री (हरदोई)
माधुरी सिंह, श्रीमती (पूर्णिया)
मालन्ना, श्री के० (चित्रदुर्ग)
मावणि, श्री रामजी भाई (राजकोट)
मलिक, श्री लक्ष्मण (जगतसिंहपुर)
मल्लिकार्जुन, श्री (महबूबनगर)
मसुदल हुसैन, श्री सैयद (मुर्शिदाबाद)
महन्ती, श्री बृजमोहन (पुरी)
महाजन, श्री वाई० एस० (जलगांव)
महाजन, श्री विक्रम (कांगड़ा)
महाटा, श्री चित्त (पुरलिया)
महाबीर प्रसाद, श्री (बांसगांव)
महाला, श्री आर० पी० (दादर तथा नगर हवेली)
महेन्द्र प्रसाद, (श्री जहानाबाद)
माने, श्री आर० एस० (इचलकरांजी)
मायातेवर, श्री के० (डिन्डिगल)
मार्तण्डसिंह, श्री (रीवा)[1]
मल्लु, श्री अनन्त रामुलु (नगरकुरनूल)
मिश्र, श्री नित्यानन्द (बोलनगीर)
मिश्र, श्री उमाकांत (मिर्जापुर)
मिश्र, श्री रामनगीना (सलेमपुर)
मिश्र, श्री सत्यगोपाल (तामलुक)
मिश्र, श्री हरिनाथ (दरभंगा)
मिश्र, श्री गार्गी शंकर (सिवनी)
मीणा, श्री रामकुमार सवाई (माधोपुर)
मिर्धा, श्री नाथूराम (नागौर)
मुखर्जी, श्रीमती गीता (पंसकुरा)
मुखर्जी, श्री समर (हावड़ा)
मुखोपाध्याय, श्री आनन्द गोपाल (आसनसोल)

मुजफ्फर हुसैन, श्री सैयद (बहराइच)
मुत्तेमवार, श्री विलास (चिमूर)
मुथुकुमारन, श्री आर० (कुड्डालोर)
मुन्डाकल, श्री जार्ज जोफस (मुवत्तुपुजा)
मूर्ति, श्री कुसुमकृष्ण (अमालापुरम)
मुरुगैयन, श्री एस० (तिरुपत्तूर)
मुल्तान सिंह, चौधरी (जलेसर)
मूर्ति, श्री एम० बी० चन्द्रशेखर (कनकपुरा)
मूर्ति, श्री एम० राजशेखर (मैसूर)
मेहता, प्रो० अजित कुमार (समस्तीपुर)
मेहता, डा० महीपत राय एम० (कच्छ)
मैत्रा, श्री सुनील (कलकत्ता उत्तर-पूर्व)
मोतीलाल सिंह, श्री (सीधी)
मोदक, श्री विजय (आरामबाग)
मोरे, श्री रामकृष्ण (खेड़)
मोहम्मद इस्माइल, श्री (बैरकपुर)
मोहिते, श्री यशवन्त राव (कराड़)
मोहसिन, श्री एफ० एच० (धारबाड़ दक्षिण)

य

याजदानी, डा० गोलम (रायगंज)
यादव, श्री चन्द्रजीत (आजमगढ़)
यादव, श्री छोटे सिंह (कन्नौज)
यादव, श्री डी० पी० (मुंगेर)
यादव, श्री राजेन्द्र प्रसाद (मधेपुरा)
यादव, श्री आर० एन० (परभणी)
यादव, श्री रामसिंह (अलवर)
यादव, श्री विजयकुमार (नालन्दा)
यादव, श्री सुभाष चन्द्र (खारगोन)
युसुफ, श्री मोहम्मद (सिवान)

र

रंगा, प्रो० एन० जी० (गुन्टूर)
रवाणी, श्री नवीन (अमरेली)
रशीद मसूद, श्री (सहारनपुर)
रहीम, श्री ए० ए० (चिरयिन्किल)
राउत, श्री भोला (बगहा)
राकेश, श्री आर० एन० (चैल)
राजदा, श्री रत्नसिंह (बम्बई दक्षिण)

राजन, श्री के० ए० (त्रिचूर)
राजू, श्री पी० वी० जी० (बोबिली)
राजेश कुमार सिंह, श्री (फिरोजाबाद)
रणजीत सिंह, श्री (चतरा)
रणवीर सिंह, श्री (केसरगंज)
रथ, श्री रामचन्द्र (आस्का)
राठवा, श्री अमर सिंह (छोटा उदयपुर)
राठौर, श्री उत्तम (हिंगोली)
राणे, श्रीमती संयोगिता (पणजी)
राम अवध, श्री (अकबरपुर)
राम, श्री राम स्वरूप (गया)
राम किंकर, श्री (बाराबंकी)
राम लिंगम, श्री एन० कुदन्तई (मयूरम)
राममूर्ति, श्री के० (कृष्णगिरि)
रामलु, श्री एच० जी० (कोप्पल)
राय, श्री ए० के० (धनबाद)
राय, श्री एम० रामन्ना (कासरगोड)
राय, श्री रामायण (देवरिया)
राय, श्री ए० सरदीश (बोलपुर)
राय प्रधान, श्री अमर (कूच बिहार)
राव, श्री एम० एस० संजीवी (काकीनाडा)
राव, श्री एम० सत्यनारायण (करीमनगर)
राव, श्री जगन्नाथ (बरहामपुर)
राव, श्री जलगांव कोन्डाला (खम्मम)
राव, श्रीमती बी० राधाबाई आनन्द (भद्राचलम)
राव, श्री एम० नागेश्वर (तेनालि)
राव, श्री पी० वी० नरसिंहा (हनमकोंडा)
रावत, श्री हरीश(अलमोडा)
राही, श्री रामलाल (मिसरिख)
रियान, श्री बाजूबन (त्रिपुरा पूर्व)
रौत, श्री जयनारायण (सलूम्बर)
रेड्डी, श्री एम० रामगोपाल (निजामाबाद)
रेड्डी, श्री के० ओबूल (कड़प्पा)
रेड्डी, श्री के० ब्रह्मानन्द (नरसारावपेट)
रेड्डी, श्री के० विजय भास्कर (कुरनूल)
रेड्डी, श्री जी० एम० (मिरयालगुडा)
रेड्डी, श्री जी० नरसिंहा (आदिलाबाद)
रेड्डी श्री टी० दामोदर (नलगोंडा)
रेड्डी श्री पी० वायपा (हिन्दूपुर)

रेड्डी, श्री पी० वेंकट (ओंगोल)
रोथुआमा, डा० आर० (मिजोरम)

ल

लकप्पा, श्री के० (टुमकुर)
लक्ष्मणन्, श्री जी० (मद्रास उत्तर)
लास्कर, श्री निहार रंजन (करीमगंज)
लारेंस, श्री एम० एम० (इदुक्की)

व

व्यास, श्री गिरधारीलाल (भीलवाड़ा)
वर्मा, श्री चन्द्रदेव प्रसाद (आरा)
वर्मा, श्री जयराम (फैजाबाद)
वर्मा, श्री दीनबन्धु (उदयपुर)
वर्मा, श्री फूलचन्द (शाजापुर)
वर्मा, श्रीमती ऊषा (खेरी)
वर्मा, श्री रघुनाथ सिंह (मैनपुरी)
वर्मा, श्री रवीन्द्र (बम्बई उत्तर)
वर्मा, श्री रीतलाल प्रसाद (कोडरमा)
वर्मा, श्री शिवचरण (मछलीशहर)
वाघ, डा० प्रताप (नासिक)
वाजपेयी, श्री अटल बिहारी (नई दिल्ली)
वासनिक, श्री बालकृष्ण रामचन्द्र (बुलढाना)
विजयराघवन, श्री बी० एस० (पालघाट)
वीरभद्र सिंह, श्री (मण्डी)
विश्वास, श्री अजय (त्रिपुरा पश्चिम)
वेंकटरामन, श्री आर० (मद्रास दक्षिण)
वेंकटसुब्बय्या, श्री पी० (नन्दयाल)
वेलू, श्री एम० एम० (अर्कोनम)
वैराले, श्री मधुसूदन (अकोला)

श

शंकरानन्द, श्री वी० (चिकौड़ी)
शक्तावत, प्रो० निर्मला कुमारी (चित्तौड़गढ़)
शनमुगम, श्री पी० (पांडिचेरी)
शमन्ना, श्री टी० आर० (बंगलौर दक्षिण)
शर्मा, श्री कालीचरण (भिण्ड)
शर्मा, श्री चिरंजीलाल (करनाल)
शर्मा, श्री नन्दकिशोर (बालाघाट)

शर्मा, श्री नवल किशोर (दौसा)
शर्मा, श्री प्रताप भानु (विदिशा)
शर्मा, श्री विश्वनाथ (झांसी)
शर्मा, डा० शंकरदयाल (भोपाल)
शाक्य, श्री दयाराम (फर्रुखाबाद)
शाक्य, श्री रामसिंह (इटावा)
शक्यवार, श्री नाथूराम (जालौन)
शास्त्री, श्री धर्मदास (करौलबाग)
शास्त्री, श्री राजनाथ सोनकर (सैदपुर)
शास्त्री, श्री रामावतार (पटना)
शास्त्री, श्री हरिकृष्ण (फतेहपुर)
शिगंडा, श्री डी० बी० (दहानू)
शिवप्रकाशम्, श्री डी० एस० ए० (तिरुनेलवेली)
शिवशंकर, श्री० (सिकन्दराबाद)
शिवेन्द्र बहादुर सिंह, श्री (राजनन्दगांव)
शुक्ल, श्री विद्याचरण (महासमुन्द)
शेजवलकर, श्री एन० के० (ग्वालियर)
शैलानी, श्री चन्द्रपाल (हाथरस)
श्रीनिवास प्रसाद, श्री वी० (चामराजनगर)

स

संखवार, श्री आशकरन (घाटमपुर)
संगमा, श्री पी० ए० (तुरा)
सईद, श्री पी० एम० (लक्षद्वीप)
सज्जन कुमार, श्री (बाह्य दिल्ली)
सत्यदेव सिंह, प्रो० (छपरा)
सतियेन्द्रन, श्री एम० ए० के० (रामनाथपुरम)
सतीश प्रसाद सिंह, श्री (खगरिया)
समीनुद्दीन, श्री (गोड्डा)
साठे, श्री वसन्त (वर्धा)
सारण, श्री दौलतराम (चुरू)
सांरगी, श्री आर० पी० (जमशेदपुर)
सावंत, श्री टी० एम० (उस्मानाबाद)
साहा, श्री अजित कुमार (विष्णुपुर)
साहा, श्री गदाधर (वीरभूम)
साही, श्रीमती कृष्णा (बेगूसराय)
साहू, श्री नारायण (देवगढ़)
साहू, श्री शिव प्रसाद (रांची)
सिंगारावाडीवेल, श्री एस० (तंजाबुर)

सिंधिया, श्री माधवराव (गुना)
सिन्हा, श्रीमती किशोरी (वैशाली)
सिन्हा, श्रीमती रामदुलारी (शिवहर)
सिन्हा, श्री धर्मवीर (बाढ़)
सिन्हा, श्री निर्मल (मथुरापुर)
सिंह, श्री सत्येन्द्र नारायण (औरंगाबाद)
सिंह, कुमारी पुष्पा देवी (राजगढ़)
सिंह, श्री सी० पी० एन० (पदरौना)
सिंह, डा० बी० एन० (हजारीबाग)
सिंह, श्री धर्मगज (शाहबाद)
सिंह, श्री बी० डी० (फूलपुर)
सिंहदेव, श्री के० पी० (ढेंकानाल)
सिदनाल, श्री एस० बी० (बेलगाम)
सुखवन्स कौर, श्रीमती (गुरदासपुर)
सुन्दरराजन, श्री एन० (शिवकाशी)
सोज, प्रो० सैफुद्दीन (बारामुला)
सुन्दर सिंह, श्री (फिल्लौर)
सुब्बा, श्री पी०एम० (सिक्किम)
सुब्बुरमण, श्री ए० जी० (मदुरै)
सुल्तानपुरी, श्रीकृष्ण दत्त (शिमला)
सूरजभान, श्री (अम्बाला)
सूर्यनारायण सिंह, श्री (बलिया)
सूर्यवंशी, श्री नरसिंह राव (बीदर)
सेट, श्री इब्राहीम सुलेमान (मंजेरी)
सेठी, श्री अर्जुन (भद्रक)
सेठी, श्री पी० सी० (इन्दौर)
सेन, श्री ए०के० (कलकत्ता उत्तर पश्चिम)
सेन, श्री सुबोध (जलपैगुड़ी)
सेबस्तियन, श्री ए० ए० दोराई (करूर)
सेलवाराजू, श्री एन० (तिरुचिरापल्ली)
सैनी, श्री मनोहरलाल (कुरुक्षेत्र)
सोनकर, श्री कल्पनाथ (बस्ती)
सौरन, श्री शिबू (दुमका)
सोरन, श्री हरिहर (क्योंझर)
सोलंकी, श्री नटवरसिंह (कापड़गंज)
सोलंकी, श्री बाबूलाल (मुरैना)
स्टीफन, श्री सी० एम० (गुलबर्गा)
स्पैरो, श्री आर० एस० (जालन्धर)
स्वामी, डा० सुब्रह्मण्यम (बम्बई उत्तर-पूर्व)

स्वामी, श्री के० ए० (विशाखापत्तनम)
स्वामीनाथन, श्री आर० बी० (शिवगंगा)
स्वामीनाथन, श्री वी० एन० (पुद्दकोटई)

ह

हन्नान मोल्लाह, श्री (उलबेरिया)
हरिकेश बहादुर, श्री (गोरखपुर)
हसदा, श्री मतिलाल (झाड़ग्राम)
हाकम सिंह, श्री (भटिंडा)
हाल्दार, श्री कृष्ण चन्द्र (दुर्गापुर)
हेमब्रम, श्री सेत (राजमहल)
होरो, श्री एन० ई० (खूंटी)

क्ष

क्षीरसागर, श्रीमती केशरबाई (बीड)

त्र

त्रिपाठी, श्री कमलापति, (वाराणसी)
त्रिपाठी, श्री रामनारायण (बिल्हौर)
त्रिलोकचन्द्र, श्री (खुर्जा)

लोक-सभा

अध्यक्ष

श्री बलराम जाखड़

उपाध्यक्ष

श्री जी० लक्ष्मणन्

सभापति तालिका

डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी

श्री सोमनाथ चटर्जी

श्री चिन्तामणि पाणिग्रही

श्री एन० के० शेजवलकर

श्री० एफ० एच० मोहसिन

श्री आर० एस० स्पैरो

सचिव

श्री अवतार सिंह रिखी

भारत-सरकार

मंत्रिमण्डल के सदस्य

प्रधान मंत्री (सभी मंत्रालय/विभाग जो नीचे उल्लिखित नहीं हैं)	श्रीमती इन्दिरा गांधी
वित्त मन्त्री	श्री प्रणव मुखर्जी
विदेश मन्त्री	श्री पी० वी० नरसिंह राव
गृह मन्त्री	श्री प्रकाश चन्द्र सेठी
ऊर्जा मन्त्री	श्री पी० शिव शंकर
रक्षा मन्त्री	श्री आर० वेंकटरामन
रेल मन्त्री	श्री ए० बी० ए० गनी खान चौधरी
योजना मन्त्री	श्री एस० बी० चव्हाण
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मन्त्री	श्री जगन्नाथ कौशल
श्रम और पुनर्वास मन्त्री	श्री वीरेन्द्र पाटिल
नौवहन और परिवहन मन्त्री	श्री के० विजय भास्कर रेड्डी
रसायन और उर्वरक मन्त्री	श्री वसन्त साठे
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मन्त्री	श्री बी० शंकरानन्द
कृषि मन्त्री	राव वीरेन्द्र सिंह
संसदीय कार्य, खेल तथा निर्माण और आवास मन्त्री	श्री बूटा सिंह
वाणिज्य तथा पूर्ति विभाग के मन्त्री	श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह
उद्योग मन्त्री	श्री नारायण दत्त तिवारी

राज्य-मन्त्री

नौवहन और परिवहन मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री जियाउर्रहमान अंसारी
खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्रालय के (स्वतन्त्र प्रभार) राज्य मन्त्री	श्री भगवत झा आजाद
सूचना और प्रसारण मंत्रालय के (स्वतन्त्र प्रभार) राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य विभाग में राज्य मंत्री	श्री एच० के० एल० भगत

रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री के० पी० सिंह देव
श्रम और पुनर्वास मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री धर्मवीर
संचार मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री वी० एन० गाडगिल
शिक्षा और संस्कृति तथा समाज कल्याण मंत्रालयों की (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्रीमती शीला कौल
कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री आरिफ मोहम्मद खां
पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय के (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्री खुर्शीद आलम खां
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्रीमती मोहसिना किदवई
उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री एस० एम० कृष्ण
गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री निहार रंजन लास्कर
कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री योगेन्द्र मकवाना
सिंचाई मंत्रालय के (स्वतन्त्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्री राम निवास मिर्धा
ऊर्जा मंत्रालय के पेट्रोलियम विभाग में राज्य मंत्री	श्री गार्गी शंकर मिश्र
ग्रामीण विकास मंत्रालय के (स्वतन्त्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्री हरिनाथ मिश्र
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, परमाणु, ऊर्जा, अन्तरिक्ष, इलैक्ट्रानिकी और महासागर विकास विभागों में राज्य मंत्री	श्री शिवराज वी० पाटिल
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री ए० ए० रहीम
संसदीय कार्य विभाग में राज्य मंत्री	श्री कल्पनाथ राय
वित्त मंत्रालय में राज्य मन्त्री	श्री पट्टाभि राम राव
रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री रामचन्द्र रथ
इस्पात और खान मंत्रालय के (स्वतन्त्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्री एन० के० पी० साल्वे
रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री सी० के० जाफर शरीफ
ऊर्जा मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री चन्द्र शेखर सिंह
ऊर्जा मंत्रालय के कोयला विभाग में राज्य मंत्री	श्री दलबीर सिंह
उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री वीरभद्र सिंह

वाणिज्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्रीमती रामदुलारी सिन्हा
गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री पी० वेंकटसुब्बय्या

उप-मन्त्री

निर्माण और आवास मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री मोहम्मद उस्मान आंरिफ
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री गुलाम नवी आजाद
पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री अशोक गहलौत
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में उप-मंत्री	कुमारी कुमुदबेन एम० जोशी
सूचना और प्रसारण मंत्रालय में तथा संसदीय कार्य-विभाग में उप-मंत्री	श्री मल्लिकार्जुन
संचार मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री विजय एन० पाटिल
वित्त मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री जनार्दन पुजारी
इलैक्ट्रानिकी विभाग में उप-मंत्री	श्री एम० एस० संजीवी राव
वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री	श्री पी० ए० संगमा
पर्यावरण विभाग में उप-मंत्री	श्री दिग्विजय सिंह
शिक्षा और संस्कृति तथा समाज कल्याण मंत्रालयों में उप-मंत्री	श्री पी० के० थुंगन

लोक सभा

सोमवार, 25 जुलाई, 1983/3 श्रावण 1905 (शक)

लोक सभा 11 बजे समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

श्री कृष्णचन्द्र हलदर (दुर्गापुर) : महोदय, जिस तरह से सुरक्षा प्रबन्ध किए गए हैं उससे लगता है जैसे संसद एक मिलिट्री कैम्प बन गया है।

अध्यक्ष महोदय : यह सभा के नियन्त्रण में है।

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार) : इतना कौन सा खतरा है? इसकी कोई जरूरत नहीं है। सदन को सदन रहने दो। कौन सा डर आ गया है?

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती (कलकत्ता दक्षिण) : यह सुरक्षा प्रबन्ध क्या है? क्या हमें सुरक्षा की कठिनाई है? यह सुरक्षा प्रबन्ध क्यों.....

(व्यवधान)

श्री रामविलास पासवान (हाजीपुर) : हमको गेट पर रोका गया है...आपको मेम्बर्स आफ पार्लियामेन्ट को साथ लेकर चलना पड़ेगा।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : यह सभा के इतिहास में पहला मौका है कि इतनी चरण सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था की गई।

(व्यवधान)

क्या हमें सुरक्षा सम्बन्धी दिक्कतें हैं। यह हमारे और आपके बीच की बात है। क्या हम पर विश्वास नहीं है?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सभा के पिछले सत्र में मुझसे सभा की सुरक्षा के बारे में पूछा गया था। मैंने

आपको बताया था चूंकि अध्यक्ष के रूप में आपने मुझे यह काम सौंपा है, तो मेरा यह कर्त्तव्य है कि सभा की गरिमा, अखण्डता और सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाये जायें तो सभा में विभिन्न पार्टियों के के अध्यक्ष और पार्टियों से परामर्श के पश्चात हमने यह कदम उठाए हैं। यह निर्णय करना आपका काम है कि.....

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : सदस्यों के लिए नहीं होना चाहिए।

श्री मनीराम बागड़ी : हम इसे नहीं चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय : सदस्यों द्वाराही इसका फैसला किया जाता है, इसमें कोई कठिनाई की बात नहीं है। जो कुछ भी पार्टियों के नेताओं द्वारा निर्णय किया गया था वही किया जा रहा है अगर आप इसे नहीं चाहते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

श्री मनीराम बागड़ी : मैं नहीं चाहता हूं···(व्यवधान)···

अध्यक्ष महोदय : देखिए, यह लोकतंत्र है और अगर आप महसूस करते हैं.....

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बात सिर्फ यह है, कि यह कार्य पार्टियों के नेताओं ने सभा में मुझे सौंपा था। अगर वे नहीं चाहते हैं तो मैं भी इसे जारी नहीं रखूंगा। अगर वह कहते हैं कि हमें सुरक्षा प्रबन्ध चाहिए तो मैं इसका स्वागत करूंगा। मुझे सिर्फ उनकी सुरक्षा की चिन्ता है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : अध्यक्ष जी, जो चर्चा हुई थी उसको ठीक तरह से पेश नहीं किया जा रहा है, माफ कीजिए। आपने एक फैसला ले लिया था। वह फैसला अमल में आने लगा था। जब विरोधी दलों के नेताओं के सामने आया तो हमने कहा—आप जिस व्यवस्था को लागू कर रहे हैं उससे देश में यह भावना पैदा होगी कि देश में असुरक्षा है···

अध्यक्ष महोदय : इस बारे में कोई प्रश्न नहीं है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप ने कहा था कि हम ने तय कर लिया है। तब हमने कम्प्रोमाइज के रूप में यह माना था कि मेम्बर्स को इसमें से निकाल दीजिए। अब आप अपने भाषण से ऐसी भावना पैदा न होने दें कि इस व्यवस्था में हमारा पूरा सहयोग है।

अध्यक्ष महोदय : मैंने कहा था—जितनी अपको चाहिए उतनी व्यवस्था करेंगे। अगर आप आज फैसला करें कि नहीं चाहिए तो मैं हटवा देता हूं। नेता लोग दुबारा बातचीत कर सकते हैं। इसमें कोई दिक्कत नहीं है। मैं अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता। यह काम नेताओं द्वारा मुझे सौंपा गया था। मुझे वही करना है जो कुछ सदस्यगण कहेंगे।

श्री मनीराम बागड़ी : हाउस कह रहा है कि नहीं चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

श्री रामविलास पासवान : मैंने आपसे कहा है कि हम से आइडेन्टिटी मांगी गई है। मेम्बर्स जब पार्लियामेन्ट हाउस में आते हैं तो वे कहते हैं कि आइडेन्टिटी कार्ड दिखलाओ। मेम्बर्स आफ पार्लियामेन्ट की चैकिंग होती है।

अध्यक्ष महोदय : वह कह सकता है। वह इसका अधिकारी है। आपको परिचय पत्र दिखाना ही होगा। मैंने कह दिया है कि जो हाउस के लीडर्स कहेंगे मैं मानने को तैयार हूं।

श्री मनीराम बागड़ी : जब यह हाउस कहता है कि नहीं चाहिए, तो इसमें लीडर्स की क्या बात है।

अध्यक्ष महोदय : यह काम करने का तरीका नहीं है। हम लोकतान्त्रिक समाज में रह रहे हैं। हर एक चीज का समाधान होता है। मैंने आपसे बिलकुल ओपनली कह दिया है कि लीडर्स के साथ बैठकर बात कर लेंगे। मेरा फर्ज था कि हाउस की सेफटी की जाय। मेरे सामने प्रश्न आया था। मैं यह बात कह रहा हूं। मुझसे हाउस में पूछा गया था।

श्री रामविलास पासवान : हाउस में कोई खतरा नहीं है···

अध्यक्ष महोदय : यह आप कैसे कह सकते हैं। कल की जिम्मेवारी आपके सिर पर होगी।··· (**व्यएधान**)···मैं लीडर्स के साथ बैठ जाऊंगा और मैंने जो बन्दोवस्त किया है।मैंने यह सभा के लिए किया है। यह सभा के निर्णय पर ही किया गया है। अगर आप नहीं चाहेंगे, तो इसे हटा देंगे, हमें क्या तकलीफ है।

(व्यवधान)

श्री मनीराम बागड़ी : इमर्जेन्सी के हालात बनाए जा रहे हैं।

श्री रतनसिंह राजदा (बम्बई दक्षिण) : अध्यक्ष महोदय, यह अत्यधिक आपत्तिजनक है।

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा) : यह कदम उठाए जाने से पहले हमसे कोई राय नहीं ली गयी थी। वह कार्यवाही में सम्मिलित होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : देखिए, श्री मुखर्जी, मुझसे सदन में कहा गया था। मेरी बात कार्यवाही में संम्मिलित हैं। मैंने कहा था कि मैं सभी आवश्यक कदम उठाऊंगा। और किसी भी कदम को उठाने से पहले आपके सामने रखूंगा। मैंने यह सभा के निर्देशानुसार किया है।

(व्यवधान)

श्री मनीराम बागड़ी : हम यह नहीं मानेंगे, चाहे मेम्बरी चली जाए।

श्री रशीद मसूद (सहारनपुर): जब आपने यह डिसाइड किया, उसके पहले अपोजीशन के लीडर्स से कह देते।

अध्यक्ष महोदय : यह कहा गया था। इससे पहले मुझसे सुरक्षा उपाय करने के लिए कहा गया था। यह सदन में कहा गया है। मैंने सदन को आश्वासन दिया कि मैं सुरक्षा उपाय करूंगा।

मैं दिखा देता हूं आपको। मैंने इन्फार्म कर दिया था।

श्री रशीद मसूद : वह किया होगा, मैं उसको नहीं कहता। मैं उसको नहीं कह रहा हूं लेकिन आपने ऐसा करने से पहले नहीं बताया।

अध्यक्ष महोदय : मैंने आश्वासन दिया था कि मैं ऐसा करूंगा।

श्री रशीद मसूद : जब आप इस को कह रहे थे, तब आपने इन्फार्म नहीं किया बल्कि इस को करने के बाद इन्फार्म किया।

अध्यक्ष महोदय : किये बगैर मैं क्या इन्फार्म करता। फिर, मैंने आपको अपना आश्वासन दिया। लेकिन यह करने के बाद, मैं यह आपके सामने रखूंगा।

(व्यवधान)

श्री रशीद मसूद : पहले इन्फार्म कर देते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह गवर्नमेंट का नहीं है। मेरी बात सुन लीजिए। इसमें किसी का कोई हाथ नहीं है और किसी के कहने पर मैंने यह नहीं किया है। फ्लोर आफ दि हाउस पर मुझसे कहा गया था और मुझसे पूछा गया था और मैंने एक अन्डरस्टेंडिंग दी थी और फ्लोर आफ दि हाउस पर एश्योरेंस किया था कि हाउस की सेफ्टी का बन्दोबस्त किया जाएगा और उनको पूरा करने के लिए मैंने यह किया है। उसके बाद यह किया है और अब अगर आप चाहते हैं···

श्री रशीद मसूद : आप इसके बारे में पहले बता देते।

अध्यक्ष महोदय : बगैर किए मैं आपको क्या बताता।

(व्यवधान)

श्री रतनसिंह राजदा : अध्यक्ष महोदय, बुलेटिन भाग II में जिन शब्दों में यह कहा गया है मुझे उस पर आपत्ति है। इसमें यह कहा गया है "सभा में पिछले बजट अधिवेशनमें घटना के अनुसार···' यह माननीय सदस्यों का महत्व कम कर रही है। जिन शब्दों में यह वर्णित किया गया है वह गलत है। यह हिस्सा बुलेटिन भाग II में से लिया गया है।

अध्यक्ष महोदय : इसमें सदस्यों के बारे में कुछ भी अनादरपूर्ण नहीं है।

श्री रतन सिंह राजदा : पिछले बजट अधिवेशन में घटना का हवाला देते हुए आप सदस्य का महत्व कम कर रहे हैं। मुझे इसमें घोर आपत्ति है। अब किसकी सुरक्षा खतरे में है? मैं पूछना चाहता हूं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं जानता हूं श्री हलदर। आप इसके लिए जिम्मेवार ठहराए जाएंगे।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : आपके दिमाग में आखिर है क्या?

अध्यक्ष महोदय : मुझसे पूछा गया था। श्री चक्रवर्ती कार्यवाही को देखिए।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : आप अध्यक्ष हैं, महोदय।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सभा की कार्यवाही को देखिए ।

(व्यवधान)

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : इसमें सदस्यों को कैसे सम्मिलित किया जा सकता है ।

(व्यवधान)

श्री रामविलास पासवान : अध्यक्ष जी, मेम्बर को यहां आने से कैसे रोकेंगे ।

अध्यक्ष महोदय : मेम्बर को कोई नहीं रोकेगा ।

श्री राम विलास पासवान : आप मेरी बात सुनिए ।

अध्यक्ष महोदय : मेम्बर को कोई नहीं रोक रहा है ।

श्री राम विलास पासवान : मैं एक व्यवस्था की बात करता हूं । मैं यह कहना चाहता हूं कि जब आप गेट पर आदमी रखते हैं तो पार्लियामेंट के स्टाफ का कोई आदमी वहां पर क्यों नहीं रखते हैं । आप दिल्ली पुलिस के कांस्टैबिल को वहां लगा देते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : कभी-कभी ऐसा होता है ।

श्री राम विलास पासवान : वह मेम्बरों को पहचानता नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय : मेम्बरों को पहचान के लिए कार्ड दिए हुए हैं ।

श्री राम विलास पासवान : अब मेम्बर क्या कार्ड लिए चला करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय : हम क्यों नहीं ?

श्री राम विलास पासवान : पार्लियामेंट हाउस के मेम्बर यहां आने के लिए कार्ड लेकर चला करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय : कार्ड रखने में हर्ज क्या है ? आप इसको बन्द करवा दें ।

श्री राम विलास पासवान : हम गले में कार्ड लटकाकर चलेंगे ।

अध्यक्ष महोदय : अब यह तो जो आप डिसाइड करेंगे, वही होगा । जो आप सब कहेंगे, वही कर देंगे । हम और कुछ नहीं करेंगे । हम इस बारे में फिर बैठ सकते हैं और दोबारा फैसला कर सकते हैं ।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ऐसा करने से क्या होता है ? अब दुबारा मीटिंग कर लेंगे ।

(व्यवधान)

श्री रतन सिंह राजदा : सभा के सदस्यों की सुरक्षा खतरे में नहीं है ।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : हम लोकतंत्र के हिस्से हैं, लेकिन वह लोकतंत्रता हमें सभा में देखने को नहीं मिलती ।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह आप मुझसे क्या करने के लिए पूछ रहे हैं ?

(व्यवधान)

श्री सत्यप्रकाश चक्रवर्ती : (व्यवधान) हम इसे सभा में नहीं पाते। यह लोकतंत्र क्या है ?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह क्या है ?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, नहीं। उसका प्रश्न नहीं है। गलत उद्धृत न करें, गलत बात न करें।

(व्यवधान)

संसदीय कार्य, खेल तथा निर्माण और आवास मंत्री (श्री बूटा सिंह): जैसा कि आपने बिल्कुल ठीक कहा कि संसद भवन के अन्दर जो व्यवस्था की गई है वह आपने सभा को जो आश्वासन दिया था उसके अनुसार है। सरकार को यह निर्देश लिखित रूप में प्राप्त हुए थे। इस प्रकार की व्यवस्था जरूरी समझी गई। आपने विरोधी पक्ष के नेताओं की मीटिंग भी बुलाई थी। उस मीटिंग में यह व्यवस्था भी उनके समक्ष रखी गयी थी। उन्होंने इस पर चर्चा की थी। इस चर्चा के दौरान कुछ संशोधन किये गये और उसी के अनुसार ही प्रबन्ध किये गये।

माननीय अध्यक्ष जो कुछ आश्वासन देते हैं वह हमारे लिए एक निर्देश बन जाता है। हमें उसे पूरा करना होता है। जो माननीय सदस्य यहां उपस्थित हैं इसके अलावा इस माननीय सभा में आने वाले हर व्यक्ति के जीवन की सुरक्षा होनी चाहिए। और यह सुरक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

(व्यवधान)

विरोधी पक्ष के लिए सरकार तथा सत्तारूढ़ पक्ष पर दोष मढ़ना आसान है। लेकिन क्या सभा इस बात को विस्मृत कर सकती है कि विरोधी पक्ष के माननीय सदस्य कारतूस भरी पिस्तौल लेकर सभा में आये थे ? क्या इस तथ्य से इन्कार किया जा सकता है ?

प्रो० मधु दण्डवते : वह भरी हुई नहीं थी।

श्री बूटा सिंह : यह बात केवल यहीं समाप्त नहीं हो जाती (व्यवधान) अभी मुझे कुछ और भी कहना है।

(व्यवधान)

यह कहना गलत है कि हम सभा के अन्दर इस तरह का वातावरण पैदा कर रहे हैं। हम सभा में मौजूद किसी भी व्यक्ति पर उंगली नहीं उठा रहे हैं कि कौन इसके लिए जिम्मेदार है। लेकिन इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि सभा के सदस्य···

(व्यवधान)

श्री रतन सिंह राजदा : पिस्तौल भरी हुई थी।

श्री बूटा सिंह : माननीय सदस्य बिना उचित पास या दस्तावेज के लोगों को यहां ले आते हैं।

सभी सदनों में यही प्रथा अपनाई जाती है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी सदस्यों को परिचय पत्र अपने पास रखने होते हैं। सुरक्षा परिषद के सदस्यों को भी परिचय-पत्र अपने पास रखना जरूरी होता है। परिचय-पत्र पास रखने का अभिप्राय यह है कि व्यक्ति की पहचान की जा सके। इस सभा में 'वाच एण्ड वार्ड' स्टाफ सब सदस्यों की पहचान रखते हैं। (**व्यवधान**) संसद सदस्यों के जीवन की सुरक्षा के लिए यह प्रबन्ध किया गया है।

अध्यक्ष महोदय : आनरेबल मेम्बर, जरा आप बैठ जाइये और मेरी बात सुनिये। देखिये···

प्रत्येक सदस्य पहले सदस्य है उसके बाद कुछ और। मेरे लिए भेद-भाव करने का प्रश्न ही नहीं है। मैं किन्हीं दो सदस्यों के बीच भेद-भाव नहीं कर सकता। इस सम्मानित संसद के सभी माननीय सदस्य समान रूप से माननीय तथा आदरणीय हैं। उन सभी को एक समान अधिकार हैं तथा वे एक ही सी प्रक्रियाओं में से गुजरते हैं। अतः यहां कोई भेद-भाव नहीं है। किन्तु अब भी मैं इस सम्मानित सभा की सम्मति के अनुसार चलूंगा और इसके लिए मैं सदैव यह आश्वासन दे सकता हूं।

(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : आप बीच में व्यवधान क्यों करते हैं ? आप कम से कम मेरी बात सुनने की शिष्टता तो दिखाइये।

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) : आप नेताओं की एक बैठक बुलाइये।

अध्यक्ष महोदय : यही मैंने किया था और मैं दुबारा···

(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : आप सुनते क्यों नहीं ?

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : मुझे खेद है कि आप सदन को बहका रहे हैं। (**व्यवधान**)। आपका सदन में हित निहित है। (**व्यवधान**) इसके बाद तो व्यवस्था हो चुकी थी।

(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : क्या आप मेरी बात नहीं सुनेंगे ?

श्री रतनसिंह राजदा : आप यह कैसे मान लेते हैं कि आपकी सारी बातें यह सभा स्वीकार कर लेगी।

अध्यक्ष महोदय : कृपया, क्या आप मेरी बात सुनेंगे ? मैं आपको सारा ब्यौरा दूंगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, कार्यवाही में मत जाइये। अगर श्री मधु दंडवते के पिस्तौल से···यह सारा मामला उठा है तो फिर आप मेम्बरों के बारे में भी इन्तजाम कीजिए, आप इससे उनको रिहाई नहीं दे सकते हैं।

प्रो० मधु दंडवते : सदन की सुरक्षा के लिए यह व्यवस्था करने की बजाय आप मुझे सदन से बाहर रख सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय : मेरी बात सुनिये। मैं उसको नहीं लाता···

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बूटा सिंह ने उस मामले का जिक्र कर यह स्वीकार कर लिया है कि यह मेम्बरों पर आपत्ति है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अगर आप लोग मेरी बात सुन लें तो स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। मैं सिर्फ इतना बताना चाहता हूं कि इस हाउस में पूछा गया कि हम मेंबर्स की सुरक्षा के लिए क्या कर रहे हैं। मैंने कहा था कि जो कुछ मेरे से हो सकता है वह जरूर करूंगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब मैं आपको बताना चाहता हूं···

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: क्या आप मेरी बात सुन नहीं सकते। आप मेरी बात को सुनने का धैर्य नहीं रखते। आप मेरी बात क्यों नहीं सुन रहे हैं?

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : मैं आपकी बात सुनूंगा। आपको भी मेरी बात सुननी होगी, श्रीमान्।

अध्यक्ष महोदय : मुझे क्यों सुननी चाहिए?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री हाल्दर, इधर देखिये। आप प्रतीक्षा करने की शिष्टता भी नहीं रखते! मेरी बात सुनिये। मैं सदन को यह वचन दे चुका हूं कि मैं कोई उपाय करूंगा।

श्री चन्द्रजीत यादव (आजमगढ़) : यह समाप्त हो चुका है। अब, दूसरा विषय लिया जाना चाहिए। (व्यवधान) आप सभी नेताओं को बातचीत के लिए बुलाइए। अब, आपको दूसरे विषय पर आना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : यही तो मैं कह रहा हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप एक बार फिर से बुलवा लीजिए और फिर से बात कर लीजिए।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा (गढ़वाल) : अध्यक्ष महोदय, यह बहुत साधारण सा मामला है। इसके लिए अलग से बुला लीजिए और बात कर लीजिए।

अध्यक्ष महोदय : मैं कहना चाहता हूं कि मुझे कहा गया था इसलिए मैंने यह किया है। करने के बाद आपके सामने रख दिया है। अगर···

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मेरी बात तो सुन लीजिए। इसके बावजूद, मैं सभी गुटों/दलों के नेताओं को बुलाऊंगा। मैं हरएक से बात नहीं कर सकता। इस विषय पर दुबारा बातचीत कर सकता हूं। कोई समस्या नहीं है।

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

श्री भरत कुमार मालदेव जी ओडेदरा (पोरबन्दर)

श्री सैफुद्दीन सोज (बारामूला)

श्री जी० भूपति (पेद्दापल्लि)

सचिव : अब्दुल रशीद काबुली।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह गलत है, इसकी अनुमति नहीं है।

(व्यवधान)

कुछ माननीय सदस्य : यह सदन की अवमानना है।

(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : प्रधान मंत्री बैठी क्या कर रही हैं ?

(व्यवधान)

इनको माफी मांगनी होगी।

(व्यवधान)

अगर यह माफी नहीं मांगेंगे तो सदन की कार्यवाही नहीं चलेगी। यह देश की सुप्रीम पार्लियामेंट है, कोई सदर बाजार नहीं है। शर्म की बात है।

श्री चन्द्र शेखर (बलिया) : मैं आपसे एक प्रार्थना कर सकता हूं ?

अध्यक्ष महोदय : मैं बिल्कुल अनुमोदन नहीं करता।

(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष जी, जो कुछ हुआ है अशोभनीय और निन्दनीय है। आप इनसे मांफी मंगवाइये।

अध्यक्ष महोदय : देखिए साहब, आप सारे माननीय सदस्य हैं। इस हाउस में जो भी चुनकर, इलेक्शन कमीशन की तरफ से डिक्लेयर होकर आता है उस माननीय सदस्य को शपथ लेने का पूरा अधिकार है, अगर किसी को कोई है तो यहां भी आप अपनी बात कहते हैं, इलेक्शन कमीशन है, इलेक्शन पेटीशन है, हाई कोर्ट है, सारा कुछ है, कर सकते हैं। लेकिन जिस तरीके की बात आप यहां करते हैं। मिस्टर टाइटलर, आपने अच्छा नहीं किया है। मैं इसका अनुमोदन नहीं करता।

सदस्य द्वारा शपथ ग्रहण

श्री अब्दुल रशीद काबुली (श्रीनगर-जम्मू और कश्मीर)

निधन सम्बन्धी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य, हम ढाई महीनों के अन्तराल के बाद मिल रहे हैं और सदन को यह सूचित करने का मेरा दुखद कर्त्तव्य है कि इस सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष सरदार हुकुमसिंह जी का 88 वर्ष की आयु में 27 मई, 1983 को नई दिल्ली में निधन हो गया।

एक प्रमुख सांसद, सरदार हुकुम सिंह संविधान सभा तथा अन्तरिम संसद् के सदस्य थे और 1948-67 के दौरान पहली तीन लोक सभाओं के सदस्य रहे।

मार्च, 1956 में, विपक्ष के सदस्य तथा सभापतियों की तालिका के सदस्य सरदार हुकुम सिंह को उपाध्यक्ष पद के लिए चुना गया था। वह दूसरी लोक सभा के उपाध्यक्ष भी दुबारा चुने गए।

अप्रैल 1962 में वे तीसरी लोक सभा के अध्यक्ष के उच्च पद के लिए निर्विरोध चुने गये और मार्च 1967 तक इसी पद पर रहे।

सरदार हुकुम सिंह एक मिलनसार व्यक्ति थे। संसदीय संस्थाओं में उनकी अटूट आस्था थी और एक पीठासीन अधिकारी की हैसियत से उनका अद्वितीय योगदान रहा और अध्यक्ष पीठ से उन्होंने महत्वपूर्ण निर्णय और विनिर्णय दिये।

दूसरी लोक सभा के उपाध्यक्ष की हैसियत से वह विशेषाधिकार समिति, गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों और संकल्पों सम्बन्धी समिति तथा अधीनस्थ विधान सम्बन्धी समिति के सभापति रहे।

लोक सभा के अध्यक्ष की हैसियत से वह संवैधानिक तथा संसदीय अध्ययन संस्थान के प्रथम अध्यक्ष भी चुने गए।

अध्यक्ष पद के अपने कार्यकाल में उन्होंने सोवियत संघ, मंगोलियन जनवादी गणतन्त्र, संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिम जर्मनी, यूनाटेड किंगडम तथा फिलीपाइन्स भेजे गए भारतीय संसदीय शिष्ट-मंडलों का नेतृत्व किया। नाइजीरिया में लागोस में तथा मलेशिया में कुआलालम्पुर में हुए राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन के लिए भारतीय शिष्टमंडल का भी इन्होंने नेतृत्व किया। वह दो वर्ष तक राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन की महापरिषद के सदस्य भी रहे।

अप्रैल 1967 में सरदार हुकुम सिंह राजस्थान के राज्यपाल नियुक्त किए गए और 1972 तक इस पद पर रहे।

गहन धार्मिक प्रवृत्ति वाले सरदार हुकुम सिंह एक बुद्धिजीवी, समाज-सुधारक और योग्य प्रशासक थे। अपने सरल हृदय और बौद्धिक गुणों, सदा बनी रहने वाली शिष्टता की भावना और शालीन व्यवहार के कारण उन्हें सभी से आदर मिला।

उनके निधन से देश ने एक ऐसा सपूत खो दिया है, जो जन-सेवा तथा लोकतंत्रीय संस्थाओं के प्रति पूरी तरह से समर्पित था।

हम अपने इस मित्र के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हैं तथा मुझे विश्वास है कि पूरा सदन शोक संतप्त परिवार को हमारी संवेदना प्रेषित करने में मेरे साथ हैं।

प्रधानमंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : श्रीमान्, मैं सरदार हुकुम सिंह के निधन पर शोक व्यक्त करती हूं। उन्होंने इस सम्मानित सदन की कार्यवाहियों की गरिमा, निष्पक्षता तथा पूर्णनिष्ठा के साथ

अध्यक्षता की तथा सदन के सभी वर्गों का आदर प्राप्त किया।

सरदार हुकुम सिंह पंजाब में कई दशकों तक जन सेवा करने के बाद इस उच्च पद पर पहुंचे। बाद में राजस्थान के राज्यपाल के रूप में सेवा करने का गौरव प्राप्त किया।

उनके परिवार और मित्रों तक कृपया हमारी संवेदना पहुंचाएं।

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा) : मैं, सदन में आपके और प्रधानमंत्री जी द्वारा व्यक्त भावनाओं में आपके साथ हूं। यद्यपि मैं सरदार हुकुम सिंह और उनके कार्यों से व्यक्तिगत रूप में परिचित नहीं हूं, हां, काफी समय पहले मैंने उनका नाम एक असाधारण संसद-विद् तथा एक प्रमुख अध्यक्ष के रूप में सुना था। उनके योगदानों का पहले ही उल्लेख हो चुका है। एक ऐसे असाधारण संसद-विद् के निधन से हमारे संसदीय लोकतंत्र को तथा जनता को वास्तव में क्षति पहुंची है। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी सांत्वनाएं शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाएं।

श्री रशीद मसूद (सहारनपुर) : अध्यक्ष महोदय, इंसान की पैदाइश अपने-में खुद फना का पैगाम लेकर आती है। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो फना होने के बाद भी अपनी याद की एक छाप तवारीख पर नुमायां छोड़ जाते हैं। सरदार हुकुम सिंह ऐसे लोगों में से थे जिन्होंने अपनी छाप तवारीख पर छोड़ी। वह एक मामूली किसान के घर पैदा हुए, अपनी मेहनत, लगन, अनथक कोशिशों और जनता की सेवा से उन्होंने हिन्दुस्तान की तवारीख में एक ऐसा मुकाम बनाया। इस पार्लियामेंट के स्पीकर जब सरदार हुकुम सिंह हुए तो उनसे पहले जो हमारी इस पार्लियामेंट के स्पीकर थे वह नुमायां तौर पर इसकी तवारीख में एक स्थान रखते थे, एक छाप इस मुल्क की पार्लियामेंट की डेमोक्रेटिक हिस्ट्री पर उन्होंने डाली थी। इसलिए मैं समझता हूं कि उनका काम बहुत ज्यादा मुश्किल था। मगर उन्होंने जिस खूबी से और खुशनसीबी से उस काम को अन्जाम दिया उसकी नज़ीर मिलना मुश्किल है। आज ऐसे लोग बहुत कम हैं कि जिनको इस गुरबत के मुकाम से उठ करके और लड़ करके इस मुकाम तक पहुंचने का मौका मिले।

मैं अपनी जानिब से और अपनी पार्टी की जानिब से सरदार हुकुम सिंह जी को खिराजे अकीदत पेश करता हूं और आपसे यह दख्वास्त पेश करता हूं कि मेरी जानिब से और मेरी पार्टी की जानिब से उनकी फेमिली तक यह पैगाम पहुंचा दिया जाय कि हम उनके गम में शामिल हैं।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : अध्यक्ष महोदय, हम आज देश के एक ऐसे महान व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं जो लोक सभा के अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं और जिन्होंने इस उच्च पद पर अत्यन्त योग्यता, सम्मान और निष्पक्षता के साथ काम किया। जब सरदार हुकुम सिंह अध्यक्ष पद पर आसीन होते थे, जिस पर आज आप विराजमान हैं, तो वह कभी भी बांयी अथवा दांई ओर नहीं देखते थे अपितु उनकी दृष्टि सदा सामने टंगे हुए श्री विट्ठल भाई पटेल के चित्र की ओर रहती थी। जो शासन के लिए चुनौती स्वरूप थे,जिन्होंने सभा की गरिमा को बराबर बनाये रखा और जिन्होंने कार्यपालिका के ऊपर विधान मंडल की श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपने विनिर्णयों से विभिन्न विषयों पर स्वतंत्र और निर्भीक वाद-विवाद का प्रोत्साहन किया, जिसमें इस सभा के विशेषाधिकार और अधिकार भी शामिल हैं। सरदार हुकुम सिंह ने अध्यक्ष के नाते जो विभिन्न विनिर्णय दिए हैं मैं उनका अध्ययन कर रहा था और मैंने अनुभव किया कि उन्होंने कई अवसरों पर नये विनिर्णय दिए हैं। हमें आज भी उनका अनुकरण करना चाहिये। सरदार हुकुम सिंह के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि लोक सभा के सदस्यों की ओर से

नहीं अपितु आपकी ओर से अभिव्यक्त होनी चाहिए, क्योंकि इसमें अनुकरण योग्य अनेक बातें हैं। उदाहरणार्थ, 2 अगस्त, 1966 को जब सभा में लोकलेखा समिति की रिपोर्टों के प्रति मंत्री के रवैये के बारे में प्रक्रिया सम्बन्धी मामले विशेषाधिकार प्रस्ताव के जरिये उठाए गए तो उन्होंने इस विषय को तकनीकी दृष्टिकोण से नहीं लिया उन्होंने यह नहीं कहा कि "यह विषय स्वीकृत नहीं किया जाता", उन्होंने यह कहा कि प्रक्रिया संबंधी विषय पर सभा में बहस की जरूरत है और उन्होंने श्री मधुलिमये को उस विषय को सभा में उठाने की अनुमति दे दी। इस विषय पर सभा में चर्चा हुई। वित्त मंत्री ने कहा कि दोनों पक्षों की ओर से हुई बहस सचमुच स्वस्थ और लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुकूल रही। आधे घण्टे तक प्रस्ताव की ग्राह्यता पर चर्चा हुई और, यद्यपि अन्त में यह अस्वीकृत कर दिया गया, सभा को विभिन्न विचार और तर्क सुनने का मौका मिला। इस तरह के महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने सभा में किये। उन्होंने प्रत्येक सदस्य के अधिकार और विशेषाधिकार की रक्षा की। और यही उस महान व्यक्तित्व की हमारे लिए विरासत है जो आज हमारे बीच में नहीं रहा। गहरी धार्मिक पृष्ठभूमि के कारण उन्होंने इस सभा में गहन धार्मिक प्रवृत्ति की छाप छोड़ी है। उन्होंने लोकसभा को प्रजातांत्रिक भावना प्रदान की, उन्होंने इस सभा को निर्भीकता प्रदान की, उन्होंने इस सभा में निष्पक्षता का संचरण किया। इन मूल्यों और सिद्धांतों का परीरक्षण कर लोक सभा के जीवन में उन्हें प्रयुक्त करना ही सरदार हुकुम सिंह को सच्ची श्रद्धांजलि है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) अध्यक्ष महोदय, सरदार हुकुम सिंह के निधन से एक व्यक्तित्व हमारे बीच से उठ गया है और सार्वजनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रिक्त हो गया है। अनेक पदों को गरिमा के साथ अलंकृत करने के बाद जब सरदार हुकुम सिंह जी ने राज्यपाल के पद से अवकाश ग्रहण किया तो उन्होंने बड़ी शांति और धैर्य से जीवन की संध्या में प्रवेश किया। उस समय मैंने एक निस्पृहता, एक निरासक्ति उनके निकट अनुभव की। मेरी आखिरी मुलाकात उनसे उस समारोह में हुई थी जो डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आयोजित हुई थी। सरदार हुकुम सिंह जी डा० श्याम प्रसाद मुखर्जी द्वारा गठित नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट केसदस्य थे, जो 1952 में लोकसभा में गठित हुई थी। सरदार साहब पहले अकाली दल से सम्बद्ध थे लेकिन उपाध्यक्ष और अध्यक्ष पद पर बैठने के बाद उन्होंने अपने को सक्रिय राजनीति से अलग किया और निष्पक्षता के साथ कर्त्तव्यपालन का प्रयत्न किया। वे दृढ़ भी थे, उदार भी थे, नियमों के प्रति जागरूक भी थे और व्यावहारिक भी थे। वे जानते थे संसद भारतीय गणराज्य के हृदय की धड़कन का प्रतिनिधित्व करती है। यह धड़कन अगर सुनी नहीं गई, इस धड़कन को अवरुद्ध करने का प्रयत्न हुआ तो लोकतंत्र सफल नहीं होगा, सार्थक नहीं होगा।

अध्यक्ष के नाते एक प्रश्न जो लगातार उनके मन को मथता था वह यह था कि अध्यक्ष को अपने चुनाव के लिए बहुमत पार्टी पर निर्भर रहना पड़ता है लेकिन उसे अपने कर्तव्य का निष्पक्षता के साथ पालन भी करना पड़ता है। मैं उनके भाषणों का संग्रह देख रहा था, आप क्षमा करें, मैं उसमें से एक अंश उद्धृत करना चाहता हूं :

> "एक और विषय पर भी विचारणीय है अध्यक्ष को हर पांच वर्ष बाद चुनाव लड़ना पड़ता है। निर्वाचित होने के लिए उन्हें अपने दल का समर्थन होना आवश्यक है। यह बहुमत दल के हित में है कि अध्यक्ष को अल्प संख्यक दलों का सम्मान और विश्वास प्राप्त हो। लेकिन इस बात को प्रायः हम विस्मृत कर देते हैं और सत्तारूढ़ दल

कभी-कभी समर्थन प्राप्त करने की आशा करता है। अगर अध्यक्ष सहमत हो तो उस पर पक्षपात का आरोप लगेगा। अगर वह असहमति दर्शाता है तो अगली बार पार्टी में इस बात के लिए जोर दिया जायेगा कि उसकी जगह किसी अन्य व्यक्ति को अध्यक्ष बनाया जाये।"

सरदार हुकम सिंह ने जो प्रश्न उस समय खड़ा किया था वह आज भी अनिर्णीत है। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों मिलकर बैठें और कोई ऐसा प्रबंध करें जिसमें एक बार अध्यक्ष निर्वाचित हो जाने के बाद वह दल से सम्बन्ध नहीं रखेगा, विरोध दल चुनाव में उसका विरोध नहीं करेंगे, वह निर्विरोध निर्वाचित होगा और सारे सदन का, भावना में भी और व्यवहार में भी, विश्वास सम्पादन करके दिखायेगा।

अध्यक्ष महोदय, उनके निधन से मुझे ऐसा लगता है मेरी व्यक्तिगत क्षति हुई है। मुझे उनके निकट काम करने का मौका मिला था। उनके निधन से आज हम सभी दुखी हैं, आप हमारी संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचा दें।

श्री सी० टी० दण्डपाणि (पोल्लाची) : भूतपूर्व लोक सभा अध्यक्ष को सभा में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई है। वह हमारे समय के सुप्रसिद्ध संसदविद् थे। कालेज की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात उन्होंने समाज सेवा को अपना राजनीतिक क्षेत्र चुना। एक समाज सुधारक होने के साथ-साथ वह बुद्धिजीवी, प्रशासक और सांसद भी थे।

जैसा कि पूर्व वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये कि उन्होंने एक मिसाल कायम की कि अध्यक्ष को किस तरह काम करना चाहिए। वह विरोधी पक्ष की ओर से उपाध्यक्ष भी निर्वाचित किए गए थे। उन्होंने विरोधी पक्ष के सदस्य रहते हुए उपाध्यक्ष पद पर अपना कार्यकाल पूरा किया। वह हमारे समय की महान विभूति हैं। निश्चय ही उनकी मृत्यु से देश की अपूर्णनीय क्षति हुई है।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि शोक संतप्त परिवार को हमारे दल की ओर से संवेदना भेजने की कृपा करें।

अध्यक्ष महोदय : इन्द्रजीत गुप्ता। यहां उपस्थित नहीं हैं। श्री रामावतार शास्त्री।

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : अध्यक्ष जी, लोक सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष, सरदार हुकम सिंह, अब हमारे बीच में नहीं रहे, लेकिन जनतंत्र को मजबूत करने के लिए या समाज को आगे बढ़ाने के लिए जो उन्होंने कार्य किए, वे हमारे और आपके सामने हैं। जरूरत इस बात की है कि हम उनके उन कार्यों का अनुसरण करें। जनतंत्र को मजबूत बनाने में और संसद को चलाने में जो भी उनका योगदान रहा, उसका अनुसरण करके ही हम उन्हें अपनी सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

इन शब्दों के साथ मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त परिवार को आपकी मारफत अपनी संवेदना भेजता हूं। आशा है आप उनके परिवार तक हमारी भावना को भलीभांति पहुंचा देंगे।

श्री ए० नीलालोहिथादसन नाडार (त्रिवेन्द्रम) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के भूतपूर्व अध्यक्ष, सरदार हुकम सिंह, के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपने और इस सदन के भिन्न नेताओं ने जो बातें बताई हैं, उनसे मैं पूर्ण रूप से सहमति प्रकट करता हूं। चाहे द्वितीय लोक सभा के उपाध्यक्ष

होने के नाते हो चाहे तृतीय लोक सभा में अध्यक्ष होने के नाते हो, उन्होंने इस सदन के संचालन में जो योगदान दिया है, वह सदन के इतिहास का अंग बन गया है। गवर्नर होने के नाते हो या अध्यक्ष होने के नाते हो, हमारी संसदीय प्रणाली के इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा ही। मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री धर्मबीर सिन्हा (बाढ़) : अध्यक्ष महोदय, अभी जिन व्यक्तियों ने सरदार हुकम सिंह को श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं मैं भी स्वयं को उनसे संबद्ध करता हूं। उन्होंने सभा में अनेक स्वस्थ परम्पराएं स्थापित की। इसके अतिरिक्त उन्होंने पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में न केवल लोक सभा को अपितु सभी विधान सभाओं को भी उस समय नेतृत्व प्रदान किया जब बाद के वर्षों में स्थिति विकट हो गई थी।

राजनीतिक दृष्टि से वह महान विभूति और संसदीय संस्थाओं के सफल नेता थे। सरदार हुकम सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने में मैं अपने मित्रों के साथ हूं।

श्री त्रिदिब चौधरी (बरहामपुर) : सरदार हुकम सिंह को जो अभी श्रद्धांजलि अर्पित की गई है मैं अपने आपको उनसे संबद्ध करता हूं जो कि हमारे देश के एक महान अध्यक्ष हुए हैं मैं उन सदस्यों में हूं जिन्हें सरदार हुकम सिंह जी को सभापति तालिका के सदस्य, उपाध्यक्ष और बाद में इस माननीय सभा के अध्यक्ष के रूप में देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुझे याद है कि कितने सुन्दर और अनूठे ढंग से उन्होंने मधुर तर्कपूर्णता और दृढ़ता का समन्वय कर लोकतांत्रिक और संसदीय सिद्धांतों का पालन किया। इस सदन के विभिन्न वर्गों और दलों और ग्रुपों के नेताओं ने उनके संसदीय जीवन और देश में लोकतांत्रिक परम्पराओं को सुदृढ़ बनाने के लिए उनके योगदान के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में जो श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं, मुझे इसमें कुछ और अधिक नहीं कहना है। यहां जो संवेदनाएं व्यक्त की गई हैं मैं उनके साथ अपना स्वर समवेत करता हूं। मेरी प्रार्थना है कि शोक-संतप्त परिवार को हमारी भावनाएं प्रेषित करने की कृपा करें।

श्री जी० एम० बनातवाला (पोन्नानी) : अध्यक्ष महोदय, हमारे भूतपूर्व अध्यक्ष सरदार हुकम सिंह जी के दुखद निर्धन पर जो संवेदनाएं व्यक्त की गई हैं मैं सर्वथा उनके साथ हूं। वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। लेकिन समूचे राष्ट्र के हित के लिए उन्होंने हमारे देश में संसदीय लोकतंत्र में योगदान की अमिट छाप छोड़ दी है। हम दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हमारी प्रार्थना है कि हमारी भावनाएं और संवेदनाएं शोकाकुल परिवार तक पहुंचा दीजिए।

श्री चित्त बसु (बारसाट) : महोदय, इस माननीय सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष सरदार हुकम सिंह जी के निधन पर आपने, प्रधानमंत्री जी ने तथा अन्य माननीय सदस्यों ने जो शोकपूर्ण संवेदनाएं व्यक्त की है मैं भी उनके साथ गहन शोक की भावना व्यक्त करता हूं। इस सम्मानीय सभा के अध्यक्ष के रूप में यह याद दिलाना मेरा कर्त्तव्य है कि सभा की गरिमा और सम्मान की उन्होंने दृढ़तापूर्वक भूमिका निभाई। वह संसद की प्रभुसत्ता और श्रेष्ठता के जबर्दस्त समर्थक थे। उन्होंने देश में संसदीय लोकतंत्र की जड़ें मजबूत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस सभा को हमारे देश की विशाल जनता की आशाओं और आकांक्षाओं का सही दर्पण का रूप देने का उनका सतत प्रयास रहा। उन्होंने इस बात का भी प्रयत्न किया कि हमारे देश की सामाजिक और आर्थिक दशा में आधारभूत परिवर्तन लाने में संसद महत्वपूर्ण माध्यम बन सके। मैं एक बार फिर गहरा शोक व्यक्त करता हूं। आप शोक संतप्त परिवार तक हमारी भावनाएं पहुंचा दें।

श्री अब्दुल रशीद काबुली (श्रीनगर) : जनाबेवाला, आपके, प्राइम मिनिस्टर साहबा और अपोजीशन के बाकी रहनुमाओं के जजबात के साथ मैं अपने आपको वाबस्ता करता हूं जिनका इजहार सरदार हुकम सिंह के लिए, किया गया है, जो जिन्होंने हमारे पार्लिमानी निजाम में स्पीकर के तौर पर और यहां के एडमिनिट्रेशन में शानदार काम किया है। आज उनकी वफात हो गई है। मैं अपने और अपनी पार्टी के जजबात उनके साथ शामिल करता हूं लेकिन साथ ही यह तवक्को रखता हूं कि जो कामे-अजीम सरकार हुकम सिंह ने किया, हमारी अजीम जम्हूरियत, पार्लियामेंट के स्पीकर के तौर पर और जिसके बारे में हमारा यह नाज रहा है कि दुनिया की अजीम जम्हूरियत है और इस निजाम में जो स्पीकर का मुकाम है, इस सैक्रेटेरियट का मुकाम है—हम यह समझेंगे कि सरदार हुकम सिंह की जो खिदमात हैं उनकी रोशनी में हम इस जम्हूरी निजाम को और ज्यादा मजबूत बनाएंगे, और जमूहरियत के अन्दर स्पीकर का जो रोल होगा, वह गैर-जानिवदारी, उसूलपरस्ती और मुसावियानः सुलूक होगा और तमाम पार्टियों की तवक्कात से जो चीजें वाबिस्तः हैं, उनको और मजबूत किया जाएगा। मैं ऐसा समझता हूं कि इस वक्त जब मुल्क के अन्दर इस किस्म के ख्यालात बढ़ रहे हैं और हमारी जमूहरियत को एक खतरा है और यह खतरा रूलिंग पार्टी की तरफ से हो रहा है, इस बात पर ध्यान दिया जाएगा। ···(**व्यवधान**)···।

श्री कमल नाथ (छिंदवाड़ा) : महोदय, इसे कार्यवाही-वृतांत से निकाल दिया जाना जाहिए। ···(**व्यवधान**)···।

श्री अब्दुल रशीद काबुली : दूसरी बात मैं यह कहना चाहूंगा कि सरदार हुकम सिंह पंजाब से वाबस्तः रहे हैं और पंजाब के हालात के बारे में जो उनके ख्यालात थे, उनको कायम रखा जाए। ···(**व्यवधान**)···।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली): अध्यक्ष जी, जहां तक रूलिंग पार्टी का सवाल है जम्मू व काश्मीर में रूलिंग पार्टी इनकी है, इसको ये ध्यान में रखें।

श्री सी० चिन्नास्वामी (गोविचेट्टिमलयम) : महोदय, आज एक महान प्रशासक और उच्चकोटि का सांसद हमारे बीच में से उठ गया है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी शोक और व्यथा की भावनाएं कृपा कर संतप्त परिवार तक पहुंचा दें।

श्री चन्द्रजीत यादव (आजमगढ़) : अध्यक्ष जी, हमारे इस सदन के भूतपूर्व अध्यक्ष सरदार हुकम सिंह आज हमारे बीच में नहीं रहे हैं। उनके बारे में जो भावनाएं इस सदन में व्यक्त की गई हैं, मैं पूरी तरह से अपने को उनके साथ सम्बद्ध करना चाहता हूं।

मैं केवल एक ही बात कहना चाहता हूं। सरदार हुकम सिंह जी अपनी युवावस्था से अपने संगठन के काम की दक्षता के लिए जाने जाते थे और जब उन्होंने सक्रिय राजनीति से अपने को अलग किया, तो उन्होंने अपने देश और अपने समाज के हित के लिए अपनी उस संगठन की शक्ति का योगदान दिया और सक्रिय राजनीति से अलग होने के बाद केवल दो काम उन्होंने अपने जीवन में लिये। एक तो छोटे बच्चों के सम्बन्ध में जो संस्थाएं काम कर रही थीं, उनमें बच्चों की भलाई के लिए अपना योगदान दिया। यद्यपि उनकी अपनी कोई सन्तान न थी उन्होंने एक बच्ची को गोद लिया था और बच्चों की भलाई के लिए अपनी सारी शक्ति अपनी ज्यादा उम्र के बावजूद और अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के बावजूद, लगा दी। बच्चों के लिए जो काम होते थे उनमें उन्होंने अपना योगदान दिया और सामाजिक और

धार्मिक कामों के लिए जब कि आज देश में ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो कि समाज को एक नई दिशा दे सकें अपने योगदान के जरिए, ऐसे वक्त में उनका हमारे बीच से उठना लोगों को महसूस होगा। मैं उनके प्रति और उनके तमाम प्रशंसनीय कार्यों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री जगजीवन राम (सासाराम): अध्यक्ष जी, सरदार हुकम सिंह जिस पीढ़ी के प्रतीक थे। उसके लोग एक के बाद एक उठते चले जा रहे हैं। उनकी प्रतिभा वहुमुखी थी और उनका कार्य-क्षेत्र बहुत विस्तृत था और किस पहलू पर कहा जाए और किस पर न कहा जाए, मैं असमंजस में पड़ जाता हूं।

जब वे इस पद पर आए थे तो सारा जीवन न्याय दिलाने की अनुभूति को साथ लेकर आए थे। इसलिए यहां भी बैठ करके उन्होंने न्याय दिलाने का प्रयत्न किया और उन्होंने जो कुछ भी रूलिंग्स दी हैं उनको आज भी देखा जाए, तो मालूम होगा कि सदन के भिन्न-भिन्न हिस्सों को न्याय दिलाने में वे हिचकते नहीं थे। यह एक बड़ी चीज थी। मैंने जैसा कि पहले कहा है कि उनका कार्य-क्षेत्र बहुत विस्तृत था। सदन के भीतर और सदन के बाहर चाहे जिस पद पर भी वे रहे हों, इंसानियत को कभी भी उन्होंने नहीं खोया और यही कारण था कि उनके साथ जिनकी सहमति नहीं होती थी, वे लोग भी उनकी ओर आकृष्ट होते थे और उनकी प्रशंसा करते थे।

सरदार हुकम सिंह अकाली दल के थे लेकिन मैं कहूंगा कि वे अच्छे और सच्चे सिख थे। वे एक बहुत बड़े भारतीय थे, प्रजातंत्र के बहुत बड़े पोषक थे और यह मानते थे कि प्रजातंत्र को हम जितना सशक्त करेंगे उतना ही देश को शक्तिशाली बनाया जा सकेगा, देश को एकत्रित रखा जा सकेगा।

मैं अधिक समय न लेकर, उनके संबंध में पूर्व वक्ताओं ने जो कुछ कहा है, उससे अपने आपको जोड़ता हूं और उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा कुछ क्षण के लिए मौन खड़ी रहेगी।

(तत्पश्चात सदस्य कुछ क्षण के लिए मौन खड़े रहे)

अध्यक्ष महोदय : दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए, सभा कल म० पू० 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

तत्पश्चात लोक सभा मंगलवार, 26 जुलाई, 1983/श्रावण 4, 1905 (शक) के प्रातः 11 बजे तक के लिए स्थगित हुई।